Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.3
Online Available at www.cmrj.in
ISSN No. 2456-1665

पोस्ट बॉक्स नं 203, नाला सोपारा: किन्नर आस्मिता और सामाजिक विमर्श

डॉ. मारोती यमुलवाड
सहयोगी प्राध्यापक
हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड

चित्रा मुद्गल हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध एवं चिंतनशील उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास आवाँ, एक जमीन अपनी और गिलिगडु विशिष्ट कथाभूमि के कारण प्रशंसित एवं पुरस्कृत हुए हैं। उनका 2017 में प्रकाशित उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं 203, नाला सोपारा किन्नर समुदाय के जीवन पर आधारित है। यह उपन्यास पत्रात्मक शैली में लिखा गया है। लेखिका के अनुसार "लंबे समय से मेरे मन में पीड़ा थी। एक छटपटाहट थी, कि आखिर क्यों हमारे एक अहम् हिस्से को अलग-थलग किया जा रहा है। हमारे बच्चों को हमसे दूर किया जा रहा है। आजादी से लेकर अभी तक कई रूढ़ियाँ टूटीं। लेकिन किन्नरों की ज़िन्दगी में कोई बदलाव नहीं आया। क्यों, आखिर इनका दोष क्या है? यही सवाल था जो मुझे बेचैन करता था। 1974 में मैं मुंबई के नाला सोपारा में रहती थी तब मेरी मुलाकात एक इसी समुदाय के एक व्यक्ति से हुई जिसे किन्नर होने की वजह से घर से निकाल दिया गया था। यह उपन्यास उसी व्यक्ति के विद्रोह की कहानी कहता है। मैंने उसे अपने घर पर बहुत दिनों तक साथ रखा।"[1]

इस उपन्यास का कथाकेंद्र बिन्नी उर्फ विनोद उर्फ बिमली है, जिसमें किन्नर-लक्षण होने के कारण परिवार उसे किन्नर चंपाबाई को सौंप देता है। परिवार उससे संबंध तोड़ने हेतु कालबादेवी का घर बेचकर नालासोपारा में बस जाता है। बड़ा भाई सिद्धार्थ (मोटा भाई) पत्राचार और संपर्क के विरुद्ध है, परंतु माँ वंदना पुत्र-स्नेहवश गुप्त रूप से अपना निजी पोस्ट बॉक्स नंबर देकर उससे पत्र-व्यवहार बनाए रखती है। इन्हीं पत्रों के माध्यम से कथा विकसित होती है। विनोद मोहन बाबा नगर, बदरपुर (दिल्ली) से पत्र प्रेषित करता है, जिनमें उसकी भावनात्मक व्यथा, माँ के स्वास्थ्य की चिंता और उसके प्रति गहरा लगाव व्यक्त होता है। वह माँ के श्रम और कष्ट को स्मरण करता है तथा उनसे दूर होने की पीड़ा झेलता है। माँ उसे मानसिक शांति हेतु कृष्ण-स्मरण का परामर्श देती है।

Online Available at www.cmrj.in
ISSN No. 2456-1665

चंपाबाई के डेरे में विनोद को उपहास और शारीरिक-मानसिक उत्पीड़न सहना पड़ता है। उसमें स्त्री लक्षण न होने के गावजूद उसे स्त्री आचरण अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है, जबकि वह स्वयं को पुरुष रूप में देखता है। वह अपने माता-पिता द्वारा त्यागे जाने को गहरे आघात के रूप में अनुभव करता है और डेरे के जीवन को 'अंधा कुआँ' मानता है। प्रतिभाशाली और मेधावी होने के बावजूद परिस्थितियाँ उसे सामाजिक बहिष्कार और आंतरिक संघर्ष की स्थिति में ला खड़ा करती हैं।

उपन्यास में किन्नर समुदाय के सूचना तंत्र की सक्रियता के कारण वे बिन्नी को लेने घर पहुँचते हैं। परिवार उसे छिपा देता है और बाद में उसकी सुरक्षा के नाम पर दूर होस्टल भेजने का विचार करता है, किंतु भयवश उसे स्कूल से हटाकर निजी रूप से पढ़ाने का निर्णय लिया जाता है। बिन्नी स्वयं पढ़कर बोर्ड में टॉप करना चाहता है। घर से जबरन अलग किए जाने की घटना में माँ की असहायता और अपराधबोध उभरता है, जबकि परिवार सामाजिक भय और कलंक से ग्रस्त दिखाई देता है। बड़े भाई और भाभी भविष्य की संतान को लेकर आशंकित हैं और चिकित्सीय जाँच तथा ज्योतिष का सहारा लेना चाहते हैं। माँ प्रकृति द्वारा बिन्नी के साथ हुए अन्याय पर प्रश्न उठाती है और उसके प्रति गहरी ममता व्यक्त करती है।

बिन्नी को अपनी माँ से यह शिकायत है कि जन्म के समय ही उसके 'तीसरे रूप' को पहचानकर उसे समाप्त क्यों नहीं कर दिया गया, जिससे उसे आजीवन अपमान, पीड़ा और शोषण न सहना पड़ता। चंपाबाई के डेरे में रहते हुए वह प्रसूति वार्डों से नवजात शिशुओं के पते नोट कर 'बधावा' की परंपरा निभाने और जीविका हेतु गाड़ियाँ धोने का कार्य करता है। डेरे से भागने के प्रयास पर उसे पकड़कर बुरी तरह पीटा जाता है, जिससे उसकी दयनीय स्थिति और भीतर पल रही महत्त्वाकांक्षाएँ स्पष्ट होती हैं। वह जोत्सना से मन ही मन प्रेम करता है और माँ को पत्र में लिखता है कि यदि वह कुछ बन पाता तो उससे विवाह कर लेता; आवश्यकता पड़ने पर बच्चा गोद लेने या अन्य उपाय से परिवार बसाने की कल्पना करता है। अपनी अस्मिता को लेकर वह गहरे मानसिक द्वंद्व और घुटन से गुजरता है।

परिवार द्वारा उसे जीवित रहते मृत घोषित कर दिया जाना उसकी सबसे बड़ी त्रासदी है। मित्र ईशान से बातचीत में उसे ज्ञात होता है कि स्कूल में उसकी दुर्घटना में मृत्यु की घोषणा कर शोक भी मनाया गया था। इस घटना से वह गहरे आहत होता है और क्षणिक रूप से आत्मविनाश का विचार करता है, किंतु किन्नर

रीति से मृत्यु न चाहने के कारण वह इस विचार से पीछे हटता है। बिन्नी अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी करने हेतु इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से पत्राचार पाठ्यक्रम करना चाहता है और प्रवेश प्रपत्र में माँ का नाम दर्ज करना चाहता है। उसकी शिक्षा के लिए किन्नरी पूनम उसे आठ हजार रुपये देती है तथा विधायक भी सहयोग का आश्वासन देते हैं। विधायक से भेंट के दौरान बिन्नी अपने अतीत को भुलाकर संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में पढ़ने की इच्छा व्यक्त करता है। विधायक उसकी जिद और साहस की सराहना करते हुए उसे कम्प्यूटर कक्षा में प्रवेश दिला देते हैं।

बिन्नी अपने पत्र में किन्नर जीवन की पीड़ा, तिरस्कार और आत्मग्लानि को व्यक्त करता है। वह बताता है कि 'किन्नर' शब्द भी सामाजिक रूप से अपमानजनक अर्थ लिए हुए है और चंपाबाई को सौंपे जाने के बाद उसका जीवन मानो अपमान का पर्याय बन गया। बिन्नी डेढ़ माह के बेसिक कम्प्यूटर कोर्स में प्रवेश लेता है। उसकी तीव्र प्रगति से सभी प्रभावित होते हैं। कोर्स पूर्ण होने पर उसे विधायक के कार्यालय में लगभग सात हजार रुपये मासिक वेतन पर कार्य करने का अवसर मिलता है, जिसमें आगे वृद्धि की संभावना है। लेखिका ने बिन्नी के माध्यम से किन्नर जीवन का सकारात्मक पक्ष प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि जननांग विकलांगता व्यक्ति की सम्पूर्ण पहचान नहीं होती। किन्नर भी संवेदनशील, बुद्धिमान और भावनाशील मनुष्य हैं; वे केवल यौन-सुख से वंचित हो सकते हैं, लेकिन वात्सल्य, प्रेम और मानवीय संबंधों से नहीं। उपन्यास में किन्नरों के साथ होने वाले सामाजिक अन्याय और हिंसा का भी चित्रण है। नाच-गाने के कार्यक्रम में पारिश्रमिक को लेकर विवाद होने पर चन्द्रा के व्यवहार को गलत समझकर किन्नरों की पिटाई की जाती है तथा पुलिस द्वारा उन्हें अपराधी की तरह लॉक-अप में डाल दिया जाता है।

बिन्नी को परिवार द्वारा किन्नरों को सौंप देने के बावजूद उसमें माता-पिता के प्रति आत्मीयता और चिंता बनी रहती है। उसकी माँ भी उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण है और उसकी प्रतिभा पर गर्व करती है। वह उसे महान गणितज्ञ शकुन्तला देवी से मिलवाने तथा उसे एक बड़ा गणितज्ञ बनाने का सपना देखती है। इस प्रकार बिन्नी का चरित्र यह प्रश्न उठाता है कि प्रतिभाशाली व्यक्ति से परिस्थितियाँ उसकी संभावनाएँ क्यों छीन लेती हैं। उपन्यास में चित्रा मुद्गल जी ने माँ की ममता का मार्मिक चित्रण किया है। बिन्नी को घर से निष्कासित करने के बाद भी माँ उसके प्रति गहरा स्नेह रखती है। वह उसके स्कूल बैग और वस्तुओं को संभालकर उसके

अभाव को महसूस करती है, जिससे मातृ-वेदना और ममत्व उजागर होता है। उपन्यास में किन्नरों की शिक्षा-चेतना को भी रेखांकित किया गया है। पूनम और चन्द्रा पढ़ना चाहती हैं। बिन्नी उनकी शिक्षा के लिए शशिकांत को शिक्षक के रूप में नियुक्त कर पारिश्रमिक देने को तैयार होती है। इससे किन्नर समुदाय में आत्मनिर्भर बनने की आकांक्षा स्पष्ट होती है।

लेखिका ने सामाजिक बहिष्कार और किन्नर गुरुओं की निरंकुशता को उनकी दुर्दशा का कारण बताया है। बिन्नी ताली बजाकर नेग माँगने की परंपरा का विरोध करता है और शिक्षा के माध्यम से मुख्यधारा में आने का समर्थन करता है। उपन्यास का मुख्य संदेश है कि किन्नरों को भी अन्य नागरिकों की भाँति शिक्षा और सम्मानजनक रोजगार का अधिकार मिलना चाहिए, तथा शासन को इसके लिए समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। बिन्नी को विधायक जी नौकरी और रहने की सुविधा देते हैं। वह चंडीगढ़ के एम.एल.ए. होस्टल में रहता है और पढ़ाई जारी रखते हुए प्रतिदिन विधायक के जनता दरबार में उपस्थित होता है। वह किन्नरों की मुक्ति का मार्ग शिक्षा को मानता है तथा समाज और अभिभावकों की सोच में परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देता है। उसके अनुसार लिंग-दोषी बच्चों को परिवार द्वारा त्यागना समस्या का मूल कारण है। "सोच बदलेगी, तभी जब अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे।"2

उपन्यास में किन्नर समुदाय की सामाजिक उपेक्षा, बेरोजगारी और मानसिक तनाव के कारण नशे की प्रवृत्ति का भी चित्रण है। किन्नर सरदार की ड्रग्स खरीदते समय गिरफ्तारी तथा चन्द्रा की पुलिस की पक्षपातपूर्ण कार्रवाई संबंधी शिकायत के माध्यम से सामाजिक दोहरे मानदंडों को उजागर किया गया है।

दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में ड्रग्स व्यापार और 'रेव' पार्टियों के माध्यम से युवाओं को नशे की ओर धकेला जा रहा है, जो गंभीर अपराध है। नारकोटिक्स विभाग से जुड़े मामले में किन्नर सरदार को जमानत मिलना कठिन बताया गया है। लेखिका ने नारी जीवन की महानता और मातृत्व की उदात्तता को रेखांकित करते हुए स्त्री को सृष्टि और समाज के निर्माण का आधार माना है। विधायक और उनकी पार्टी किन्नर समुदाय के अधिकार, आरक्षण, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक उत्थान के लिए संगठित आंदोलन की आवश्यकता पर बल देते हैं। तिवारी जी का मत है कि समाज की लिंग-पूजक मानसिकता किन्नरों को सहज स्वीकार नहीं करती; इसके लिए माता-पिता से अधिक धार्मिक पाखंड और सामाजिक संकीर्णता जिम्मेदार है। वे मानते हैं

कि किन्नरों को धर्म-कर्म से वंचित करना अन्याय है और उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन का अधिकार मिलना चाहिए। तिवारी विनोद को समझाते हैं कि पढ़े-लिखे किन्नरों को अपनी बिरादरी के अधिकारों, विशेषतः आरक्षण के प्रश्न पर आगे आना चाहिए। उनका विचार है कि यदि विभिन्न राज्यों से आरक्षण की मांग उठेगी तो राजनीतिक स्तर पर परिवर्तन संभव होगा। वे सोशल मीडिया और संगठित आंदोलन को माध्यम बनाकर जागरूकता फैलाने की योजना रखते हैं।

विनोद किसी राजनीतिक दल से न जुड़कर अपनी शिक्षा पूर्ण करना चाहता है, किंतु उसे सामाजिक दायित्व निभाने के लिए प्रेरित किया जाता है। चंडीगढ़ में किन्नर सम्मेलन की योजना बनती है, जिसमें आरक्षण, अधिकार और सामाजिक स्वीकृति जैसे व्यावहारिक मुद्दों पर बल दिया जाता है। विनोद किन्नरों को 'अदर्स' श्रेणी में रखने का विरोध करते हुए उन्हें जन्मजात जाति-वर्ग के अनुसार अधिकार देने और परिवारों को जननांग दोषी संतानों को न त्यागने हेतु कानून बनाने की आवश्यकता बताता है। उपन्यास किन्नर बच्चों की शिक्षा, रोजगार और सम्मान से वंचित स्थिति का यथार्थ चित्रण करता है तथा मानसिकता परिवर्तन को समाधान मानता है।

कथा पत्र-शैली में विनोद द्वारा माँ को लिखे सत्रह पत्रों के माध्यम से आगे बढ़ती है। माँ अंततः अपराध स्वीकार कर उसे घर लौटने का आग्रह करती है। पूनम, चन्द्रा, सायरा आदि पात्र किन्नर जीवन के विविध पक्षों को उभारते हैं। विधायक का चरित्र अवसरवादी राजनीति का प्रतीक है; वह किन्नरों को वोट बैंक के रूप में देखता है। अंततः विनोद की हत्या सामाजिक और राजनीतिक स्वार्थों की त्रासदी को रेखांकित करती है। विनोद के मन में व्यक्तिगत उन्नति और सामुदायिक जागरण के बीच द्वंद्व है। सम्मेलन में अपने भाषण में वह किन्नरों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण अपनाने, उनके जीवन-संघर्ष, पीड़ा और सामाजिक वंचना को समझने का आग्रह करता है। इस प्रकार लेखिका ने किन्नर विमर्श को भावनात्मक और वैचारिक आधार प्रदान किया है।

निष्कर्ष:

चित्रा मुद्गल का उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा किन्नर जीवन की करुण यथार्थता, सामाजिक उपेक्षा और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज है। पत्रात्मक शैली में रचित यह कृति केवल

बिन्नी की व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि उस समूचे समुदाय की पीड़ा का प्रतिनिधित्व करती है जिसे समाज ने 'अदर्स' की श्रेणी में रखकर मुख्यधारा से अलग कर दिया है। उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि जननांग दोष किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण पहचान नहीं होता; किन्नर भी अन्य मनुष्यों की भाँति संवेदनशील, प्रतिभाशाली और स्वप्नदर्शी होते हैं। शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक स्वीकृति ही उनके सम्मानजनक जीवन का आधार बन सकती है। बिन्नी का संघर्ष इस तथ्य को स्थापित करता है कि परिवर्तन की शुरुआत परिवार की मानसिकता से होनी चाहिए- यदि अभिभावक अपने लिंग-दोषी बच्चों को त्यागने के बजाय स्वीकार करें, तो किन्नर जीवन की त्रासदी काफी हद तक कम हो सकती है।

लेखिका ने मातृत्व, मानवीय करुणा और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को जोड़ते हुए यह संदेश दिया है कि किन्नरों को दया नहीं, बल्कि अधिकार और समान अवसर चाहिए। सामाजिक चेतना, शिक्षा और संवैधानिक व्यवस्था के माध्यम से ही उनके जीवन में वास्तविक परिवर्तन संभव है। इस प्रकार यह उपन्यास किन्नर विमर्श को मानवीय, वैचारिक और सामाजिक स्तर पर नई दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. (http://www.opinionpost-in/chitra mudgal & transgender & nalasopara)
2. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा चित्रा मुदगल, पृ. 112